

न्यायालय सहायक कलेक्टर (उपखण्ड अधिकारी) सांचौर जिला जालोर

पीठासीन अधिकारी - श्री रामकिशन सोनी आर.ए.एस.

प्रकरण संख्या - 46/2011

प्रार्थीगण

- 1- चनणीदेवी पत्नी हरू उर्फ हरिया
 - 2- किशनलाल पुत्र हरू उर्फ हरिया
 - 3- शांयती पुत्री हरू उर्फ हरिया
 - 4- बाबू पुत्री हरू उर्फ हरिया
 - 5- सोहनी पुत्री हरू उर्फ हरिया
- कौमयान-विश्नोई, साकिनान-
चौरा, तहसील - सांचौर
जिला - जालोर (राज.)

बनाम

अप्रार्थीगण

- 1- हरू उर्फ हरिया पुत्र सरदार विश्नोई
 - 2- भारमल पुत्र सरदार विश्नोई
 - 3- हीरा जोत्ते खराज विश्नोई
 - 4- बाबू पुत्र खराज विश्नोई
 - 5- हरयन्द पुत्र काना विश्नोई
 - 6- बाबूलाल गोद कोला विश्नोई
 - 7- हुकमा पुत्र लूम्बा रेवारी
 - 8- नारणा पुत्र लूम्बा रेवारी
- साकिन अप्रार्थी संख्या 3 व 4-
मालवाड़ा, अन्य चौरा, तहसील-
सांचौर, जिला-जालोर (राज.)
- 9- राजस्थान सरकार जरिये भूमिधारी
तहसीलदार सांचौर
 - 10- उपपंजीयक अधिकारी कार्यालय सांचौर

प्रार्थनापत्र अन्तर्गत धारा 212 आर.टी. एक्ट

उपस्थिति-

- 1- प्रार्थीगण वकील श्री सदराम विश्नोई उपस्थित
- 2- अप्रार्थी संख्या 1 की ओर से वकील श्री बाबूलाल पालड़िया उपस्थित
- 4- अप्रार्थी संख्या 9 व 10 राज पैरोकार उपस्थित

निर्णय

दिनांक - 18/04/2011

संक्षिप्त में प्रकरण के तथ्य इस प्रकार है कि प्रार्थीगण ने अप्रार्थीगण के विरुद्ध खातेदारी हकों की घोषणा व स्थायी निषेधाज्ञा का वाद पेश कर साथ में उक्त अस्थायी निषेधाज्ञा का प्रार्थनापत्र पेश कर निवेदन किया कि हम सभी अप्रार्थी संख्या एक हरू उर्फ हरिया की संतान एवं पत्नी है। अप्रार्थी संख्या दो सगा भाई है। अप्रार्थी संख्या पांच व छह भाई के पुत्र है। अप्रार्थी संख्या तीन, चार, सात व आठ सहखातेदार है। हमारी पुश्तैनी भूमि गांव चौरा, भादरूणा व मालवाड़ा में आई हुई है। भादरूणा व चौरा की सीमा एक होने से दोनों गांवों में भूमि है। यह तमाम भूमि हमारी पुश्तैनी है जो हमारे दादा सरदारराजी के समय की है। अप्रार्थी संख्या एक के द्वारा क्रय की गई नहीं है। ग्राम चौरा के पुराने खेत खसरा नम्बर 331 रकबा 38 बीघा 13 विस्वा सरदारराजी के पुत्र फगलू, हरिया, भारमल के



18/04/2011
सहायक कलेक्टर,
(उपखण्ड अधिकारी, सांचौर)

सामाजिक एवं खातेदारी अधिकारों के उपयोग से वंचित करना न्यायसंगत नहीं है। ऐसे तो सभी पुत्र अपने पिता की संपत्ति पर कब्जा जमाकर पिता को जीवनयापन करने से महसूस कर देंगे। जो सामाजिक व्यवस्था के विपरीत होगा।

भेने पत्रावली में प्रस्तुत दस्तावेजों का अध्ययन एवं अवलोकन किया। अस्थायी निषेधाज्ञा का प्रार्थनापत्र निस्तारण करने से विधि के द्वारा सुस्थापित सिद्धान्त प्रथम दृष्टया मामला, सुविधा का सन्तुलन एवं अपूरणीय क्षति तीनों बिन्दुओं पर विश्लेषण करना होगा, जिसके परिप्रेक्ष्य में निम्नानुसार विवेचन है -

प्रथम दृष्टया मामला

वादग्रस्त भूमि प्रार्थीगण के दादा के नाम की हो, तत्पश्चात हरू उर्फ हरिया को जारिये उत्तराधिकारी प्राप्त हुई हो, ऐसा कोई दस्तावेज प्रार्थीगण ने पेश नहीं किया है। इस प्रकार संपूर्ण दस्तावेज से वादग्रस्त भूमि अप्रार्थी संख्या एक की कतई पुश्तैनी मानी नहीं जा सकती, वादग्रस्त भूमि अप्रार्थी संख्या एक के स्वयं की प्रथम सैटलमेन्ट से क्रयसुदा खातेदारी एवं कब्जाकाशत की भूमि है। विधि के सिद्धान्तों के अनुसार एक रेकोर्डेड खातेदार के विरुद्ध स्थायी निषेधाज्ञा कतई जारी नहीं की जा सकती। जिससे प्रथम दृष्टया मामला प्रार्थीगण के पक्ष में नहीं बनता है।

सुविधा का सन्तुलन

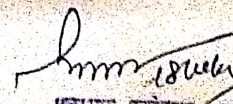
वादग्रस्त आराजी अप्रार्थी संख्या एक की प्रथम सैटलमेन्ट से क्रयसुदा, खातेदारी एवं कब्जाकाशत की भूमि है तथा अप्रार्थी संख्या एक द्वारा प्रस्तुत जमाबन्दी, मिसल बन्दोबस्त, खतौनी बन्दोबस्त एवं मिलान क्षेत्रफल आदि से स्पष्ट है कि मौके पर कब्जाकाशत अप्रार्थी संख्या एक हरू उर्फ हरिया का बदस्तूर है। प्रार्थीगण ने ऐसा कोई दस्तावेज पेश नहीं किया, जिससे कि वादग्रस्त भूमि पर प्रार्थीगण का कब्जाकाशत माना जा सके। मौखिक कथनों पर प्रार्थीगण का विश्वास नहीं किया जा सकता। जिससे सुविधा का सन्तुलन भी उक्त विवेचन अनुसार अप्रार्थीगण के पक्ष में बनता है।

अपूरणीय क्षति

पत्रावली पर प्रस्तुत दस्तावेज एवं राजस्व रिकॉर्ड से साबित है कि वादग्रस्त भूमि अप्रार्थी संख्या एक हरू उर्फ हरिया की प्रथम सैटलमेन्ट से ही क्रयसुदा व कब्जाकाशत एवं खातेदारी की है, जो अप्रार्थी के नाम भूमि राजस्व अभिलेख में खातेदारी दर्ज है। जिसके अनुसार एक रेकोर्डेड खातेदार को अपने हक से वंचित नहीं किया जा सकता। यदि एक रेकोर्डेड खातेदार को अस्थायी निषेधाज्ञा से रोका जाता है तो अपूरणीय क्षति प्रार्थीगण को न होकर अप्रार्थी संख्या एक को होना संभव है। जिससे उक्त बिन्दू भी प्रार्थीगण के पक्ष में नहीं बनता है।

इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषण एवं विवेचन अनुसार अस्थायी निषेधाज्ञा के कानूनी तीनों स्तम्भ प्रार्थीगण के पक्ष में न होकर अप्रार्थी संख्या एक के पक्ष में बनते हैं, जिससे प्रार्थीगण का प्रार्थनापत्र कानूनी पोषणीय नहीं होने से खारिज योग्य है।

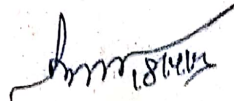



महामहक फलेंडर, सचिव
(उप सचिव खातेदारी, रायपुर)

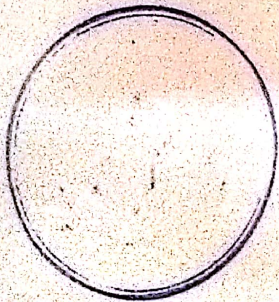
आदेश

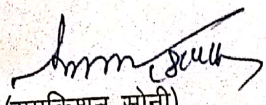
अतः दिनांक 28.03.2011 को ग्राम चौरा के खेत खसरा नम्बर 569, 570, 571, 572, ग्राम भादरुणा के खेत खसरा नम्बर 1145, 1145/1918 एवं ग्राम मालवाड़ा के खेत खसरा नम्बर 126, 126/1037, 486, 487, 489, 490, 491, 492, 493, 515, 516 कुल रकबा 11.71 हेक्टर की जारी अस्थायी निषेधाज्ञा को निरस्त किया जाता है एवं प्रार्थीगण द्वारा प्रस्तुत प्रार्थनापत्र स्वीकार योग्य नहीं होने से अस्वीकार कर खारिज किया जाता है। पत्रावली बाद तकमिल फैसल सुमार होकर नम्बर से कम हो।




(रामकिशन सोनी)
सहायक कलेक्टर (उपखण्ड अधिकारी)
सांचौर

निर्णय आज दिनांक 18/4/13 को मेरे द्वारा खुल्ले न्यायालय में सुनाया गया।




(रामकिशन सोनी)
सहायक कलेक्टर (उपखण्ड अधिकारी)
सांचौर